|  |
| --- |
| 24. Februar  |
| **Fest des Hl. Matthias, Apostel** |
| Lesung: Apg 1, 15-17. 20ac - 26; Evangelium: Joh 15, 9-17 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht |  |
|  | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes |  |
|  |  |  |
| Kyrie | GL 161 | Du rufst uns, Herr |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 171 | Preis und Ehre |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 113, 1-5a u. 6-7 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 62, 1 | Der Name des Herrn |
|  | oder Psalmlied: |  |
|  | GL 81, 1+4+5 | Lobet den Herren |
|  | oder Kanon: |  |
|  | GL 415 | Vom Aufgang der Sonne |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich habe euch erwählt und dazu bestimmt,* |
|  | *dass ihr Frucht bringt und dass eure Frucht bleibt.* |

|  |  |
| --- | --- |
|  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 3+4 | Ich bin euer Weg geworden |
|  | GL 484, 1+4+5 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 275 | Selig, wem Christus |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 204 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 487, 1-5 | Nun singe Lob, du Christenheit |
|  | GL 446, 1-4 | Lass uns in deinem Namen |
|  | GL 491, 1+3 | Ich bin getauft |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 380, 1+4 | Großer Gott |

|  |
| --- |
|  |
|  |
|  |
|  |  |  |